RNI Reg. No. UPBIL/2001/6057
वर्ष 6 अंक 18
दिनांक:16-30 सितम्बर 2006 पाक्षिक
प्रकाशन स्थान—वाराणसी
पृष्ठ — 4
प्रो. एस. एन. त्रिपाठी मेमोरियल फाउन्डेशन
(रजि. सं. 928/92-93) द्वारा
www.sntmf.org
संकलित एवं जनहित में प्रसारित
सहयोग राशि : रु 2/—

Medical News Letter आयुर्विज्ञान बुलेटिन

भारत को रोग मुक्त करने का संकल्प

यह एक महत्वपूर्ण पत्र है। पढ़ने के बाद अपने मित्रों को भी दें

प्लेग : एक सामाजिक... विज्ञान में अभिरूचि....
आर्थोस्कोपी, भूख बढ़ाना Lipid Profile in..............
Aroma Therapy कब्ज पुराने पेट रोग......
मांस—मछली का अधिक... अरहर के औषधि—गुण
जबान के पांच .... खाने की चीजों में ....

प्लेग : एक सामाजिक अभिशाप

प्लेग एक सक्रांमक बीमारी है जो मुख्यरूप से गिलहरी, चूहों, कुत्तों तथा अन्य रोडेन्ट्स (Rodents) से होती है। यह सामान्यत: प्लेग संक्रमित पिस्सू द्वारा फैलती है। मनुष्यों तथा अन्य जानवरों में फैलाती हैं। ये संक्रमित जानवरों के सीधे सम्पर्क में आने या संक्रमित श्वास की बूदों से भी फैल सकता हैं। घरों में प्राय: यह घरेलू जानवरों के माध्यम से फैलता हैं। इसके जीवाणु को Yersinia pestis कहते हैं। प्लेग मुख्यत: 3 प्रकार होता है।

1. Bubonic (ब्योबोनिक)
2. Septicemic (सेप्टीसीमिक)
3. Pneumonic (न्यूमोनिक)

Bubonic (ब्योबोनिक) प्लेग सबसे सामान्य प्रकार का होता हैं। एक बार शरीर में प्रवेश करने के बाद ये त्वचा और ऊतकों में द्विगुणित होता है और फिर लसीका तन्त्र में प्रवेश कर जाता हैं। इसमें बुखार, कपकपी, सिरदर्द और थकान जैसे सामान्य लक्षण प्रकट होते हैं। धीरे—धीरे संक्रमित व्यक्ति में buboes विकसित होते है जो कि बढ़ी हुई लसीका गाँठे होती हैं।

Septicemic (सेप्टीसीमिक) प्लेग संक्रमण के सीधे रक्त में पहुँचने पर होता है। इसमें buboes विकसित नहीं होते हैं। क्योंकि संक्रमण के लसीका गाँठों में पहुचने से पहले ही Severa bacteria हो जाता हैं। हो जाता हैं। इसमें मुख्य लक्षण बैक्टीरिया, सेप्टिक सॉक, थम्ब्रोसिस, अन्त: वाहिनी में रक्त का थक्का, त्वचा पर घाव आदि हैं।

Pneumonic (न्योमोनिक) प्लेग जो कि फेफड़ों से सम्बन्धित हैं संक्रमित वायु के अन्त: श्वसन के कारण होती हैं। ब्योबोनिक तथा सेप्टीसिमिक प्लेग इसके द्वितीयक कारण भी हो सकते हैं। Bubonic या सेप्टीसीमिक प्लेग की तुलना में यह एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य में फैल सकता हैं। तेज ज्वर,

शेष पृष्ठ— 2 पर

आर्थोस्कोपी

कष्टप्रद जोड़ो का स्थायी इलाज

आम तौर पर उम्र ढलने के साथ—साथ हमारे शरीर की कोमल मांसपेशिया ही नहीं, बल्कि कठोर हड्डियाँ भी शरीर के कई आन्तरिक कारणों से कमजोर पड़ने लगी है, जिसके कारण जोड़ों (विशेष तौर घुटने के जोड़) की असहनीय तकलीफें शुरू हो जाती हैं। लेकिन अब जोड़ों की तकलीफों से स्थाई तौर पर निजात दिलाने के लिये जोड़ों के लिए विशेष रूप से प्रयुक्त दूरबीन विधि (आर्थोस्कोपी) का विकास हो चुका है। यद्यपि कि इन आधुपिक तकनीकों का इस्तेमाल विकसित देशों में बहुतायत में प्रचलित है तथा हमारे देश के दिल्ली, मुम्बई, मद्रास, बैंगलोर, कलकत्ता जैसे महानगरों के उच्च—स्तरीय अस्पतालों में ही सुलभ थे, परन्तु आज अस्थि, रीढ़ व जोड़ों के विशेषज्ञ चिकित्सा केन्द्रों पर कई नगरों में भी जन साधारण को सुलभ है। यह महज एक भ्रान्ति ही है कि चिकित्सा की आधुनिक विधियाँ अधिक खर्चीली होती है जबकि इन विधियों को अपना कर पारम्परिक विधि की तुलना में कम समय की भर्ती, दवा पर कम खर्च द्वारा जल्द और बहुत कम खर्च में रोगी पूर्ण स्वास्थ लाभ हो सकता है।

घुटने के जोड़ों की समस्यायें वैसे तो सभी उम्र एवं सभी वर्ग के लोगों को हो सकती है। लेकिन पचास वर्ष से अधिक उम्र के लोगों, खास तौर पर अधिक उम्र की महिलायों को घुटने के असहनीय दर्द एवं सूजन में सामान्य इलाज से अस्थाई तौर पर राहत तो मिलती है, लेकिन एक अवस्था के बाद ये तकलीफें इस कदर बढ़ जाती हैं कि पैर को हिलाना—डुलाना दूभर हो जाता है और मरीज को कुण्ठाग्रस्त अपाहिज जीवन जीना पड़ता है।

अब तक इन बीमारियों का कोई स्थायी इलाज नहीं था लेकिन अब शल्य—चिकित्सा के क्षेत्र में आयी क्रान्तिकारी उपलब्धियों की बदौलत इसका स्थायी व कारगर इलाज किया जाता है। दूरबीन विधि के जरिये लगभग एक से डेढ़ सेन्टीमीटर मात्र का चीरा

शेष पेज—2 पर

कब्ज पुराने पेट रोग का लक्षण व निवारण

कब्ज कोई बिमारी नहीं बल्कि पुराने पेट रोग का एक लक्षण है। अत: कब्ज की कोई औषधि लेना ठीक नहीं है। इसके पुराने पेटरोग कि पूर्ण चिकित्सा करने से ही कब्ज लक्षण से पूर्ण छुटकारा मिल सकता है नहीं तो ज़िदगी भर कब्ज निवारण चूर्ण खाते रहना पडेगा, साथ ही ऐसे कब्ज निवारण चूर्णो के कुप्रभाव का भी शिकार होना पड़ेगा। अत: बुद्धिमानी इसमें है कि कब्ज के रोगियों को पुराने पेट रोग की चिकित्सा अवश्य करनी चाहिए और कब्ज से पूर्ण निजात पाना चाहिए। वास्तव में पुराने पेट रोग में यकृत खराब हो जाता है जिसके कारण लिवर/यकृत की कोशिकाओं में सूजन हो जाता है, लिवर में लिवर में इनजाइम बनना कम हो इनजाइम बनना कम हो जाता है भूंख का लगना कम हो जाता है, थकावट लगने लगती है, जो खाए शरीर में नहीं लगता, हल्का बुखार, सरदर्द, गैस बनने लगता है। परन्तु लिवर खराबी का मुख्य एवं शुरूआत पेट खराबी ही है जिसका लक्षण आँव, मरोड़, पेचिस, म्यूकस व चिकट है अर्थात् पहले पेट रोग, फिर यकृत रोग तत्पश्चात् कब्ज और पुराने कब्ज से तमाम रोग होते हैं जिनमें बावासीर, भगन्दर, पाइल्स, फिस्चुला, सीधे प्रमुख रोग हैं। अत: जिन व्यक्तियों को कोई भी लक्षण उपरोक्त जैसा महसूस होए उन्हें पेट रोग, यकृत रोग व कब्ज तीनों की ही चिकित्सा अवश्य करनी चाहिए, ताकि पुराने

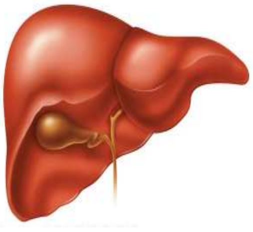

पेट रोग के गम्भीर परिणाम जैसे गठिया, रक्तचाप, गैस, अनिद्रा, मानसिक रोग, बदन दर्द, मधुमेह, हृदयरोग, ऊर्जाक्षय, ओजक्षय आदि न होवे एवं मनुष्य प्रसन्न और स्वस्थ रहे। अत: हम फिर बताते हैं कि कब्ज कोई व्यधि नहीं बल्कि पुराने पेट रोग का लक्षण है और कब्ज से निजात पाने के लिए लैक्सो—टी चूर्ण एक से दो चम्मच रात में सोने के पहले पानी के साथ लेना चाहिए, यकृत रोग हेतु हिपैटोमेड दो टिकिया नाश्ते — खाने के बाद दिन में तीन बार एवं पेट रोग के लिए कुटज बिल्वपानक सिरप 20 ml तीन

शेष पेज—3 पर

Lipid Profile in Leukemia

Several studies have reported clear relationship between low cholestrol leveles and cancer. Alterations of cholesterol metabolism, including increased cholesterol synthesis and accumulation of cholesterol esters in tumor tissue associated with a decrease of high density lipoprotein cholesterol in serum, were previously observed in different models of neoplastic cell proliferation including haematological malig

शेष पेज—4 पर

Document Produced by deskPDF Unregistered :: http://www.docudesk.com

Medical News Letter
आयुर्विज्ञान बुलेटिन

विज्ञान में अभिरूचि बढ़ाने में असफलता के कारण

पिछले कुछ वर्षों से विज्ञान को अपना कैरियर बनाने में छात्र उत्सुकता नहीं दिखा रहे हैं। उनका रूझान प्रोफेसनल कोर्स जैसे Eng, MBA इत्यादि मेडिकल विषयों में ज्यादा हो गया है। अभी हाल में भारत सरकार के वरिष्ट सलाहकार का विचार एक राष्ट्रीय समाचार पत्र में प्रकाशित हुआ जिसमें उन्होनें इंगित किया कि भारत का वैज्ञानिक शोध का स्तर भी पहले से गिरा है। अर्थात् युवाओं के अलावा वरिष्ठ वैज्ञानिकों में भी विज्ञान के प्रति रूचि घट रही है जो एक भयावह परिस्थिति को दर्शाती है। जब वरिष्ठ वैज्ञानिक ही कमजोर पड़ जायेंगे तो युवा वैज्ञानिक कैसे बढ़गें।

इस विषय पर कई वैज्ञानिकों, राज नेताओं, राजनयिकों ने समय–समय पर अपने विचार प्रस्तुत किये जो विभिन्न पत्रिकाओं में एवं समाचार पत्रों में प्रकाशित भी हुए। सरकार ने भी छात्रों को विज्ञान की तरफ आकर्षित करने क लिए कई कार्यक्रमों की घोषणायें भी की, परन्तु बहुत सुधार अभी नहीं दिख रहा है।

मेरे विचार से इस दिशा में अभी तक किये गये प्रयासों में कुछ त्रुटिया अवश्य होगीं जिसके कारण ऐसा प्रत्याशित परिणाम नहीं आ रहा है। शायद इसका मुख्य कारण उद्योग में वैज्ञानिकों की आवश्यकता का महसूस न होना। इस क्षेत्र को बढ़ाने हेतु शिक्षा एवं उद्योग के बीच सीधा सम्बन्ध बनाने का हर संभव प्रयास करना चाहिए। सरकारी संस्थाओं एवं विश्वविद्यालयों में कार्यरत वैज्ञानिकों को उनके विशिष्ट ज्ञान के बदले आर्थिक लाभ दिलाने का भरपूर प्रयास करना चाहिये। Consultancy द्वारा धर्नाजन को बढ़ाना चाहिए तथा जो वैज्ञानिक प्रोजेक्ट चलाते है या अच्छे शोध पत्र प्रकाशित करते है या सामाजिक गतिविधियों में जुड़े है उन्हें सम्मान देने चाहिए तथा यथासम्भव आर्थिक लाभ एवं कार्य करने की सुगमता बढ़ानी चाहिये। शायद इस देश में ऐसी परम्परा का पूर्ण अभाव है मुख्य रूप से विश्वविद्यालय में जहाँ कई विषयों के अध्यापक होते है वहाँ वैज्ञानिकों के लिये विशेष कानून बनाकर आर्थिक लाभ दिलाने की प्रक्रिया कठनन हो जाती है। परन्तु ऐसा करना आवश्यक है वरना वैज्ञानिकों को देश की आर्थिक विकास का मुख्य धारा से जोड़ना कठीन होगा।

प्रो० यामिनी भूषण त्रिपाठी

प्लेग : एक सामाजिक अभिशाप..........

कपकपी, malaise और myalig इसके प्रमुख लक्षण हैं। इसके अलावा कफ, सीने में दर्द, dyspnea आदि लक्षण भी प्रदर्शित होते हैं। सीने के X-ray में bilateratal inflatration और Consolidation दिखाई देता हैं। Gasrtrointenstional लक्षणों में उल्टी डायरिया, पेट दर्द जैसे लक्षण प्रकट होते हैं। न्यूट्रोफिल भी सामान्य से अधिक हो जाती है। Bubonic प्लेग का Incubation अवधि 2–8 दिन तक की होती हैं। इलाज न होने की दशा में यह फेफड़ों तथा रक्त में फैल जाता हैं। इसमें 50–60 प्रतिशत मृत्यु होने की सम्भावना होती हैं। ऐसी ही स्थिति Pneumonic प्लेग में भी होती है। प्लेग की जाँच मुख्यत: रक्त, लसीका गाँठों, कफ, सेरिब्रोस्पाइनल द्रव में yersinia testis का culture करके की जाती है। ये जीवाणु एक ग्राम निगेटिव बेसिलस है।

इसकी बायो–केमिकल जाँचों में Catalase postive का होना तथा oxidase और Urease Negative होना प्रमुख है। इसके पक्ष में मुख्य रूप से antibiotic strecptomycin का उपयोग किया जाता है, इसके अलावा doxycycline और Chloromphenical भी मुख्य एण्टीबायोटिक हैं। एण्टीबायोटिक Resitance yersinia में बहुत कम होता है।

आस–पास की साफ सफाई तथा किसी भी व्यक्ति में इसके लक्षण प्रकट होने पर तुरन्त इलाज कराना चाहिए और इसकी तत्काल सूचना स्वास्थ्य विभाग को करनी चाहिए ताकि इसे फैलने से रोका जा सके। 1994 में सूरत, गुजरात इसका उदाहरण है। इस समाजिक अभिशाप को हमें समाप्त करना हैं।

वरूण केसरवानी
स्कूल का बायोटेक्नोलाजी
बी० एच० यू०

आर्थोस्कोपी...

लगा कर घुटने का आपरेशन किया जा सकता है। यह बिल्कुल आसान प्रक्रिया है इनमें न तो रोगी को कोई दर्द होता है, ना ही शरीर से रक्त–क्षति होती है। आपरेशन के बाद रोगी को सिर्फ आधे दिन अस्पताल में रहने की जरूरत होती है। इस दौरान भी उसे चलने फिरने या घुटने मोड़ने की पूरी स्वतन्त्रता रहती है। घुटने में चोट लग जाने के कारण 'कार्टीलेज' के फट जाने तथा लिगामेन्ट के टूट जाने, विभिन्न प्रकार के दर्द व सूजन सम्बन्धी बीमारियों तथा आर्थराइटिस (गठिया) के इलाज के लिये आर्थोस्कोपी विधि वरदान साबित हुई है। घुटने की तकलीफ मुख्यत: तीन तरह की होती है, इसमें एक है 'आस्टियो आर्थराइटिस' है जो पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं में अधिक पाया जाता है। आजकल अपेक्षाकृत कम उम्र के लोगों में भी पाया जाता है वैसे यह रोग पचास वर्ष के बाद के लोगों में ही होता हैं, इसका मुख्य कारण नियमित व्यायाम नहीं करना और खान–पान तथा रहन–सहन ठीक नहीं होना है। ज्यादा वजन वाले लोग इस तकलीफ से ज्यादा पीड़ित रहते हैं यह तकलीफ बुढ़ापे के कारण उत्पन्न होती हैं। दुसरी तरह की तकलीफ 'र्‌यूमेटायड आर्थराइटिस' है, जिसका अमूमन 30 से 40 वर्ष के लोगों में ज्यादा असर दिखाई देता है। अभी भी इन तकलीफों के कारण के विषय में अनु–संधान जारी है, किन्तु दर्द–रहित जीवन के लिये आधुनिक विधियाँ हमें आने वाले दिनों के लिए अमूल्य देन होंगी। घुटनों की तकलीफ का तीसरा मुख्य कारण घुटने में चोट लगना होता है। दुर्घटना अथवा खेल–कूद में चोट लगने के कारण कार्टिलेज व लिगामेंट टूट जाते हैं। परम्परागत विधि से इन तकलीफों का निराकरण करने के लिये आपरेशन करके टूटे हुए कार्टिलेज अथवा लिगामेन्ट को निकाल दिया जाता है, लेकिन मरीज को करीब डेढ़ माह तक प्लास्टर लगाये रखना पड़ता है। जिसका आर्थिक नुकसान भी रोगी को ही उठाना पड़ता है और फिर मरीज को काफी समय तक व्यायाम भी करना पड़ता है फिर भी पूर्ववत् स्थिति पूरी तरह सन्तोषप्रद नहीं मिल पाती किन्तु दूरबीन विधि से एक दिन के भीतर को घुटने में चार मिली–मीटर तक चौड़ी दूरबीन डालकर उसी दूरबीन में प्रयुक्त कैमरे द्वारा टेलीविजन पर देखते हुये सहजता से सफलतापूर्वक आपरेशन किया जाता हैं।

परम्परागत विधि से आपरेशन कराने पर आपरेशन के बाद घुटने के जाम होने और जख्म में मवाद पड़ने का खतरा रहता है। यही नहीं मरीज को सामान्य रूप में आने में 6 माह तक समय लग सकता है। इसी कारण दूरबीन विधि खिलाड़ियों के लिये वरदान मानी जा रही है।

अस्थि चिकित्सा में अर्न्तराष्ट्रीय मानदण्डों के अनुकूल उच्च–तकनीको द्वारा परम्परागत विधियों की तुलना में बेहतर चिकित्सा परिणाम सहज ही सुलभ है, किन्तु आवश्यकता इस बात की है कि विभिन्न विकसित विधियों की जानकारी न केवल चिकित्सकों बल्कि आम नागरिकों तक पहुँचायी जाय क्योंकि ''दुर्घटना जनित विकलांगता भविष्य का पोलियों है बचाव व तत्कालिक विशेषता चिकित्सा ही एक मात्र उपाय है।''

डॉ० एस० के० सिंह

रजोनिवृत्ति (मेनोपोज)

किशोरांवस्था में सभी आधुनिक लड़कियां यौवनावस्था या वय: संधि तथा मासिक धर्म के प्रारम्भिक अनुभव से परिचित हो जाती है। यही कारण है कि उनमें से अधिकांश लड़कियां इस ओर से बिना किसी परेशानी के गुजर जाती हैं, लेकिन कुछ लड़कियों के लिए इस प्रक्रिया की शुरूआत एक के बाद एक परेशानी का कारण बनती चली जाती है। मनोवैज्ञानिकों ने इस परेशानी का नाम लाइफ स्ट्रेस दिया है।

औरत को जिस रजोनिवृत्ति (मनोपोज) का सामना करना पड़ता है वह है, आयु के एक दौर में उनका मासिक धर्म हमेशा के लिए बंद हो जाता है। इसी को रजोनिवृत्ति कहा गया है। रजोनिवृत्ति भी इस तरह की आवश्यक प्रक्रिया है जिस तरह मासिक धर्म की प्रारम्भ प्रक्रिया। इन दोनो ही प्रक्रियाओं से गुजरती नारी के (प्रारम्भिक अवस्था में लड़की तथा परिपक्व अवस्था में नारी) नित्य प्रति के जीवन का तनाव माना जाता है। इस तनाव की अनुक्रियाएं (रेस्पोन्सेस) विभिन्न महिलाओं में विभिन्न तरह से होती है। लगभग 25 प्रतिशत महिलाओं को पता नहीं चल पाता कि वे रजोनिवृत्ति (मनोपोज) की स्थिति में आ गई है।

शेष अगले अंक में

Document Produced by deskPDF Unregistered :: http://www.docudesk.com

कब्ज पुराने पेट रोग का लक्षण व निवारण...

बार नाश्ते–खाने के बाद लेकर सम्पूर्ण चिकित्सा करनी चाहिए। इन औषधियों को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व आयुर्वेद संकाय प्रमुख व काय चिकित्सा विभागाध्यक्ष प्रो० (स्व०) एस० एन० त्रिपाठी ने शोध अनुसंधान एवं कुशल अनुभवों के आधार पर दिया है, जिसका निर्माण सूर्या फार्मास्युटिकल्स, राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित जी० एम० पी० प्रमाणित उद्योग द्वारा, जनहित में किया जाता है।

डॉ० वाचसपति त्रिपाठी
सूर्या फार्मास्युटिकल्स,

Aroma Therapy and Ayurveda

Aroma therapy is the therapeutic application of fragrances or valuables to cure, mitigate or prevent infectious & indispositions.

In aroma-therapy the essential oils & their constituents are inhaled sniffed, orally ingested or applied locally to skin. The terpenoid molecules get absorbed or are transported into the blood stream and the this it may exert distinct effects in human being. Aroma in one of the precious gift of nature to us which has a great importance in our day to day life. Aroma is frequently used by woman as a part of their attractive appearance & to please the male partner, where as people use it to please the God workshiping. Vaidic literature is full of references of Aroma used by Rishi Kanyas.

Sushrut has mentioned aroma as a reguvenating substance, which improves the vital powers (Bala & Oja). Not only this, aroma also eliminates the bad odour of sweat and ultimately provides the pleasant look of person (S.S. Chi, 24/61). In Raj Nighanta Sugandhi Triphala is mentioned as a separate class. Jatiphala, Poogaphala and Lavang Kalika has been used in medical practices as Sugandhi Triphala. Twag, Ela & Patra as trisugandhi and adding Nagakeshar to this combination as chaturjata. In Ayurveda the essential oils of many aromatic plants viz. Til, Alsi, Kusum, Post, Erand and Sarjarasa have been mentioned for the treatment of many diseases. Aroma of Costus (Kustha) was found to be very useful in the relief of pain during the course of labour, producing a mild degree of sedation in mothers without any adverse effect on the foetus.

Prof. Y.B. Tripathi

जबान के पांच हिस्से बताते हैं स्वाद

किसी लजीज व्यंजन को देखते ही जबान में पानी आ जाता है। जबान में स्वाद को महसूस करने की क्षमता है। जो चारों तरह के स्वाद को महसूस कर सकता हैं। जिनमें मीठे, खट्ठे, नमकीन तथा कडवे स्वाद को महसूस करवाती है अग्र भाग है मिठास का अहसास कराता है। दूसरा जोन जबान के दोनों तरफ का होता है जिससे व्यंजन के नमकीन होने का अनुभव होता है, जबकि जबान के पीछे की ओर के दोनों तरफ के हिस्से व्यंजन की खटास महसूस कराते हैं और जबान के पीछे का अंतिम भाग कडवे अथवा तीखेपन का अनुभव देता है। वैज्ञानिकों का कहना है कि जबान का पांचवा और अंतिम जोन उसका अग्र भाग है। यह भाग व्यंजन की मिठास के अलावा उसके नमकीन होने का एहसास कराता है।

लोकतेज समाचार पत्र

खाने की चीजो में कीटनाशकों की सीमा तय होगी

नई दिल्ली (पी० टी० आई) सरकार ने खाद्य मिलावट निरोधक नियमों (पी० ए० एफ०) में संशोधन की पेशकश की है, ताकि विभिन्न तरह के खाद्य पदार्थों में कुछ कीटनाशकों की सीमा निर्धारित की जा सके।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने दिनांक– 3.09.06 रविवार को इसकी जानकारी दी। मंत्रालय इंसेक्टिसाइड एक्ट 1968 के तहत पंजीकृत ६ और कीटनाशकों की मैक्सिमम रेजिड्यू लिमिट (एम० आर० एल) निर्धारित करेगा। मंत्रालय द्वारा जारी विज्ञप्ति में कहा गया है कि यह संशोधन अंतर्रराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत कोडेक्स मेथड के अनुरूप होगा।

जिन कीटनाशकों के लिए मैक्सिमम रेजिड्यू लिमिट तय हैं वे हैं– कार्बर्ली, फिनाइट्रॉथियन, हाइड्रोजन फॉसफाइड, आइनॉर्गेनिक बोरोमाइड, मैलाथियन, फॉस्फामाइडन और डिथिऑकार्बामेटस।

नवभारत टाइम्स

वर्गीकत विज्ञापन

Letter of Interest for
Propojed Project to DST

Popularizing Science in School going Children

Please contact :
Prof. Yamini Bhusan Tripathi
Department of Medicinal Chemistry
IMS, Banaras Hindu University, Varanasi-221005

Campus Mail Service

(One can pay from Project or Personal account)

Join Today

Rs. 150/= per month
2 Pickups/ day
Organized by
BHU Telephone Directory Committee
Contact : 230-7547
yaminiok@yahoo.com

Workshop

October 12-15, 2006

Advance Techniques of Molecular Biology and Advances in Herbal Drug Manufacturing & Standardization

Research & Development Centre,
Prof. S.N. Tripathi Memorial Foundation
1, Gandhi Nagar, Nariya, Varanasi-5
Tel : 0542-2366577, Cell : 9415694450
E-mail : pratibhaybt30@yahoo.com, yaminiok@yahoo.com

आवश्यकता

घर में खाना बनाने वाली कुक की
कार्य समय : सुबह 7–10 बजे तथा 2–5 बजे तक
पार्ट टाईम अखबार वितरीत करने हेतु एक स्वस्थ्य व्यक्ति की जो साइकिल चलाना जानता हो।
सम्पर्क सूत्र : 71 कृष्णबाग, नगवा, वाराणसी–221005

हमारी विज्ञापन दरें

- नगर आसपास के जिलों में मुफ्त प्रसार।
- व्यक्तिगत पामप्लेट प्रकाशन से भी सस्ता।
- 5 हजार प्रतियां मुफ्त वितरित होती हैं।

विज्ञापन के दर निम्न प्रकार हैं–

45/- प्रति कालम सेंटीमीटर (प्रथम पृष्ठ), **35/-** प्रति कालम सेंटीमीटर, **4500/-** पूरा पेज, **2500/-** आधा पेज
वर्गीकृत विज्ञापन 16 शब्दों तक 60/- अतिरिक्त शब्द रू० 5/-

इस अखबार के द्वारा विज्ञापन हैण्ड बिल से भी सस्ता

Require Volunteers to Run Senior Citizen Day Care Center

सम्पर्क सूत्र : एस० एन० त्रिपाठी मेमोरियल फाउण्डेशन
71 कृष्णबाग, नगवा, वाराणसी–221005

Document Produced by deskPDF Unregistered :: http://www.docudesk.com

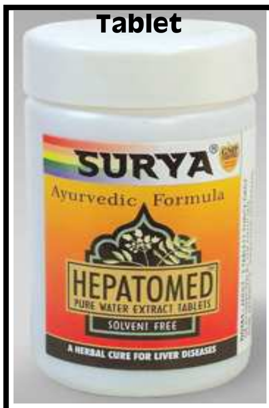

Hepatomed Syrup

A Dietary Supplement for Jaundice, Infective Hepatitis Cirrhosis of Liver, Hepatosplenomegaly & Dyspepsia

Ingredients :

Kutki (P. kurroa), Kalmegha (A. paniculata), Vasaka (A. vasaca), Bhringraj (E. alba), Makoya (S. nigrum), Kasni (C. intybus), Lemon Juice.

Dosage :

Adult : 2 TSF/ 2 tabs Thrice dialy

Children : 1 TSF / 1 tabs Thrice daily. or as directed by the physician.

Head Office :
71, Krishna Bagh, Nagwa,Varanasi-221005 (U.P.)
INDIA, Phone:542-2368885,2367855;
Telefax:542-2366566,
Email: suryaherbals@rediffmail.com
www.suryapharmaceuticals.com

मांस-मछली का अधिक सेवन डाइवर्टिकुलाइटिस को बुलाना

मांस और मछली के अधिक शौकीन और हरी सब्जियों व फाइबर वाली चीजों को कम खाने वाले लोगों के लिए एक बुरी खबर यह है कि वे आसानी से डाइवुर्टिकुलाइटिस के शिकार हो सकते हैं। इस रोग से आज–कल बहुत सारे लोग पीड़ी हुए हैं। यह बीमारी वास्तव में एक का कोलाइटिस ही है।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में मेडिसिन विभाग के प्रो० अनूप मिश्रा ने इस रोग के बारे में बताया कि वास्तव में डाइवेर्टिकुलाइटिस रोग उन लोगों को अधिक होता है जो जो मांस–मछली अधिक खाते है। और हरी सब्जियों व फाइबरयुक्त खाद्य वस्तुओं को कम सेवन करते हैं। उन्होंने कहा कि अब ऐसे लोगों को सतर्क हो जाना चाहिए और हरी सब्जियों व फाइबर की चीजों का सेवन भी अधिक मात्रा में तुरंत शुरू कर देना चाहिए। उन्होंने बताया कि इस रोग के होने से आंत में सूजन आ जाती है जिससे बड़ी आंत के बाई ओर जलन होने लगती है। इसमें आंत में गुब्बारेनुमा रचनाएं बन जाती हैं जिसमें भोजन या मल फंस जाता है। इससे बुखार हो जाता है और दर्द भी होता है। डॉ० मिश्रा ने कहा कि यह रोग अधिकतर अमेरिका वालों में दिखाई पड़ता है। भारतीयों में कम देखने को मिलता है। इस रोग से पीड़ित लोगों को मिर्च–मसाला, तेल, खटाई और अत्यधिक ठंडी गर्म चीजों से परहेज करना चाहिए। इसमें रोग को आमतौर पर एंटीबायोटिक दवा दी जाती है।

गौसम्पदा, जनवरी 2006

Role of Reactive Oxygen species and Antioxidants on Pathophysiology of Male Reproduction

Infertility has been a major medical and social issue. Defective sperm function is the most prevalent cause of male infertility and is difficult to treat. Many environmental, physiological, and genetic factors have been implicated in the poor sperm function and infertility. Free radical-induced oxidative damage to spermatozoa is one condition, which is recently gaining a considerable attention even in alocoholic and diabetic men for its role in inducing poor sperm function. Therefore, use of antioxidants may be beneficial in this case

Prof. Y.B. Tripathi

Lipid Profile in Leukemia.........

association has been described in other types of malignancies as well. The exact mechanism of hypocholesterolemia is unclear. However, low density lipoprotein receptor activity of leukemic cells was found to be inversely correlated with the plasma cholesterol concentration. Hypo-cholesterolemia as possible prognostic factor in malignancies is also suggested in some studies.

Prof. Yamini B. Tripathi

अरहर के औषधि-गुण

अरहर की दाल खुश्क, कब्ज करने वाली, कफ व पित्त का शमन करने वाली, वात कुपित करने वाली होती है। यह छिलका सहित नहीं खाई जाती इसलिए इसका अत्यधिक प्रयोग हानिकारक होता है। यहां अरहर के कुछ औषधीय घरेलू नुस्खे प्रस्तुत कर रहा हूँ।

खुजली : अरहर के पत्ते या दाल, दही के साथ पीस कर लेप करने से खुजली ठीक होती है।

मुंह के छाले : अरहर की कोमल पत्तियों को थोड़ी देर रोजाना चबाने से छाले ठीक होते हैं।

सूजन : इसकी दाल पीस कर पुल्टिस बना कर सूजन पर बांधने से सूजन ठीक हो जाता है।

कटे घाव : अरहर के पत्ते, बिना पानी के पीस कर कटे घाव पर रख कर पट्टी बांध दें।

आंख की फुंसी : अरहर की दाल साफ पत्थर पर पीस कर दिन में 2-3 बार आंख की फुंसी पर लगायें।

खांसी : इसके पत्ते और मिश्री समान मात्रा में लेकर कर चबाएं।

रक्त प्रदर : अरहर के पत्ते 20 ग्राम जल के साथ पीस कर 100 मि० ली० पानी में घोल कर छान कर पिएं।

स्तन में कम दूध : अरहर की दाल में यथेष्टी घी मिला कर माता को पिलाने से स्तनों में दूध आने लगता है।

निरोगधाम

भूख बढ़ाना

नींबू का रस 15 मि० ली०, मिश्री 150 ग्रा०, अनार दाना और सोंठ 40–40 ग्रा०, काली मिर्च, पीपल, छोटी इलायची, दाल चीनी, तेजपात – ये सब 20–20 ग्राम, पोदिने के पत्ते 10 ग्राम, धनिया व सेन्धा नमक 80–80 ग्राम और भुना जीरा 120 ग्रा०। सेन्धामनक व मिश्री छोड़ कर सभी चीजें अलग–अलग कूट–पीस कर कपड़छन महीन चूर्ण करलें और सबकों मिलाकर नींबू का रस डालकर घुटाई करें। मिश्री पीस कर डाल दें व घुटाई जारी रखें। अन्त में सेन्धानमक भी डाल दें और घुटाई जारी रखें। जब सब पदार्थ अच्छी तरह मिल जाएं तब चूर्ण को सुखा कर बोतल में भर लें। इस चूर्ण को 1–1 चम्मच सुबह और शाम, भोजन करने से एक घण्टे पहले, पानी के साथ ले लिया करें यह चूर्ण अपच, अरूचि, अग्निमांद्य, अफारा और गैस आदि व्याधियां दूर कर भूख बढ़ाता है।

निरोगधाम

Medical News Letter
आयुर्विज्ञान बुलेटिन

प्रकाशक, मुद्रक मालिक
डा० प्रतिभा त्रिपाठी
मुद्रण स्थल–'काबरा प्रेस'
सम्पादक : 'डा० यामिनी भूषण त्रिपाठी
कार्यालय : 1, गांधी नगर, नरिया, वाराणसी,
ई–मेल : ayurvigyanbull@yahoo.com

BOOK POST

Document Produced by deskPDF Unregistered :: http://www.docudesk.com